# अध्याय 6: गिरिधर कविराय की कुंडलिया

**विषय-सूची** — 7 प्रश्नावली · 13 प्रश्न


| | | |
|---|---|---|
| प्रश्नावली 6.1 | मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न) | 4 प्रश्न |
| प्रश्नावली 6.2 | पंक्तियों पर चर्चा | 2 प्रश्न |
| प्रश्नावली 6.3 | मिलकर करें मिलान | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 6.4 | सोच-विचार के लिए | 3 प्रश्न |
| प्रश्नावली 6.5 | शब्द से जुड़े शब्द | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 6.6 | कविता की रचना — काव्य-विशेषता मिलान | 1 प्रश्न |
| प्रश्नावली 6.7 | सोच-समझकर — संदेश और उचित कार्य | 1 प्रश्न |


## प्रश्नावली 6.1 — मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)

### प्रश्न 1

"बिना बिचारे" काम करने के क्या परिणाम होते हैं? (क) दूसरों से प्रशंसा मिलती है। (ख) मन में शांति बनी रहती है। (ग) अपना काम बिगड़ जाता है। (घ) खान-पान सम्मान मिलता है।

**हल**

कुंडलिया की पंक्तियों के अनुसार — 'बिना बिचारे जो करै सो पाछे पिछताय। काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय।'

इन पंक्तियों में स्पष्ट कहा गया है कि बिना सोचे-समझे काम करने से अपना काम बिगड़ जाता है।

इसके अलावा दुनिया में लोग हँसते हैं और मन में चैन नहीं रहता — लेकिन प्रशंसा, शांति या खान-पान-सम्मान मिलने का उल्लेख नहीं है।

सही उत्तर: (ग) अपना काम बिगड़ जाता है।

**उत्तर: (ग) अपना काम बिगड़ जाता है।**

### प्रश्न 2

"चित्त में चैन" न पा सकने का मुख्य कारण क्या है? (क) प्रयास करने पर भी टाला न जा सकने वाला दुख (ख) बिना सोचे-समझे किए गए कार्य की असफलता (ग) खान-पान, सम्मान और राग-रंग का अभाव (घ) दुनिया द्वारा की जाने वाली निंदा और उपहास

**हल**

कुंडलिया में कहा गया है — 'जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै।'

अगली पंक्ति में कारण स्पष्ट है — 'खटकत है जिय माहिं किकयो जो बिना बिचारे।' अर्थात् बिना सोचे-समझे किया गया काम ही मन में खटकता रहता है और चैन नहीं देता।

यह बिना विचार के किए गए कार्य की असफलता का परिणाम है।
सही उत्तर: (ख) बिना सोचे-समझे किए गए कार्य की असफलता।

**उत्तर: (ख) बिना सोचे-समझे किए गए कार्य की असफलता।**

### प्रश्न 3

"बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ" पंक्ति द्वारा कौन-सी सलाह दी गई है? (क) भविष्य की सफलता के लिए अतीत की गलतियों से सीखने की (ख) अतीत की असफलताओं को भूलकर भविष्य पर ध्यान देने की (ग) अतीत और भविष्य दोनों घटनाओं को समान रूप से याद रखने की (घ) अतीत और भविष्य दोनों को भूलकर केवल वर्तमान में जीने की

**हल**

पंक्ति का शाब्दिक अर्थ है — 'बीती बात को भूल जाओ और आगे की सुध लो।'
'बिसारि दे' का अर्थ है 'भूल जाओ' और 'आगे की सुधि लेइ' का अर्थ है 'भविष्य की चिंता करो।'
इस पंक्ति में अतीत को भूलकर भविष्य पर ध्यान देने की सलाह दी गई है — न कि गलतियों से सीखने की, न समान याद रखने की, न केवल वर्तमान में जीने की।
सही उत्तर: (ख) अतीत की असफलताओं को भूलकर भविष्य पर ध्यान देने की।

**उत्तर: (ख) अतीत की असफलताओं को भूलकर भविष्य पर ध्यान देने की।**

### प्रश्न 4

"जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ" पंक्ति का क्या अर्थ है? (क) हमें कठिनाइयों और चुनौतियों से बचना चाहिए। (ख) हमें आराम की तलाश करने में मन लगाना चाहिए। (ग) हमें असंभव और कठिन कार्यों पर ध्यान देना चाहिए। (घ) हमें सहज जीवन पर ध्यान देना चाहिए।

**हल**

'जो बनि आवै सहज में' का अर्थ है — जो काम सहजता से, स्वाभाविक रूप से बन सके।
'ताही में चित देइ' का अर्थ है — उसी में अपना मन लगाओ।
अर्थात् हमें उन कार्यों में मन लगाना चाहिए जो सहजता से सम्भव हों — यही सहज जीवन पर ध्यान देना है।
सही उत्तर: (घ) हमें सहज जीवन पर ध्यान देना चाहिए।

**उत्तर: (घ) हमें सहज जीवन पर ध्यान देना चाहिए।**

## प्रश्नावली 6.2 — पंक्तियों पर चर्चा

### प्रश्न 1

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए — "बिना बिचारे जो करै सो पाछे पिछताय। काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥"

**हल**

ये पंक्तियाँ गिरिधर कविराय की पहली कुंडलिया की आरंभिक दोहे-पंक्तियाँ हैं।
'बिना बिचारे जो करै' — जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम करता है।
'सो पाछे पिछताय' — वह बाद में पछताता है।
'काम बिगारे आपनो' — वह अपना ही काम खराब कर लेता है।
'जग में होत हँसाय' — और दुनिया में उसकी हँसाई (उपहास) होती है।
इन पंक्तियों का भाव यह है कि बिना विचार किए कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति ऐसा करता है, वह अपना काम तो बिगाड़ता ही है, साथ ही दुनिया में उसकी हँसी भी उड़ती है और वह बाद में पछताता रहता है।

**उत्तर: बिना सोचे-समझे काम करने वाला व्यक्ति अपना काम खराब करता है, दुनिया में उसकी हँसी उड़ती है और वह बाद में पछताता है।**

### प्रश्न 2

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए — "बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ। जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ॥"

**हल**

ये पंक्तियाँ गिरिधर कविराय की दूसरी कुंडलिया की आरंभिक दोहे-पंक्तियाँ हैं।
'बीती ताहि बिसारि दे' — जो बात बीत गई, उसे भूल जाओ।
'आगे की सुधि लेइ' — आगे (भविष्य) की सुध लो, यानी भविष्य की चिंता करो।
'जो बनि आवै सहज में' — जो काम स्वाभाविक रूप से, सहजता से बन सके।
'ताही में चित देइ' — उसी में अपना मन लगाओ।
इन पंक्तियों का भाव यह है कि जो बात या कार्य बीत चुकी है, उसमें मन लगाकर दुखी होने से कोई लाभ नहीं। इसलिए अतीत को भूलकर भविष्य के बारे में सोचना चाहिए और जो काम सहजता से संभव हो, उसी में मन लगाना चाहिए।

**उत्तर: जो बात बीत गई उसे भूलकर भविष्य की चिंता करो और जो काम सहजता से संभव हो, उसी में मन लगाओ।**

## प्रश्नावली 6.3 — मिलकर करें मिलान

### प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं, उनसे संबंधित अर्थ वाली स्तंभ 2 की पंक्तियों से उनका मिलान कीजिए — स्तंभ 1: 1. जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै। / खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै॥ 2. कह गिरिधर कविराय दुख कछु टरत न टारे। / खटकत है जिय माहिं किकयो जो बिना बिचारे॥ 3. ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। / दुजरन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै॥ 4. कह गिरिधर कविराय यहै करू मन परतीती। / आगे को सुख होइ समुझि बीती सो बीती॥ स्तंभ 2: A. जो कार्य बिना विचार किए किया जाता है, वह लंबे समय तक मन में खटकता रहता है और उसकी पीड़ा से छुटकारा पाना मुश्किल होता है। B. बिना विचार के किए गए कार्य के कारण मन अशांत रहता है। अच्छा खान-पान, सम्मान या जीवन की खुशियाँ भी उस व्यक्ति को सुख नहीं दे पातीं। C. अपने मन को इस बात पर विश्वास करना सिखाओ कि भविष्य की खुशी को समझते हुए अतीत के दुखों को भुलाकर आगे बढ़ना चाहिए। D. ऐसे कार्य कीजिए कि किसी बुरे व्यक्ति को हँसने का मौका न मिले और मन में किसी प्रकार का दोष या अपराधबोध न हो।

**हल**

स्तंभ 1 की पंक्ति 1 — 'जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै। / खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै॥' का भाव है: बिना सोचे काम करने से मन अशांत रहता है और खान-पान, सम्मान, राग-रंग कुछ भी अच्छा नहीं लगता।
→ यह स्तंभ 2 के अर्थ B से मेल खाता है।

स्तंभ 1 की पंक्ति 2 — 'कह गिरिधर कविराय दुख कछु टरत न टारे। / खटकत है जिय माहिं किकयो जो बिना बिचारे॥' का भाव है: बिना विचार का किया काम मन में खटकता रहता है, उसकी पीड़ा दूर नहीं होती।
→ यह स्तंभ 2 के अर्थ A से मेल खाता है।

स्तंभ 1 की पंक्ति 3 — 'ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। / दुजरन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै॥' का भाव है: ऐसे काम करो कि कोई बुरा व्यक्ति हँस न सके और मन में कोई दोष न रहे।
→ यह स्तंभ 2 के अर्थ D से मेल खाता है।

स्तंभ 1 की पंक्ति 4 — 'कह गिरिधर कविराय यहै करू मन परतीती। / आगे को सुख होइ समुझि बीती सो बीती॥' का भाव है: मन को यह विश्वास दिलाओ कि अतीत के दुखों को भुलाकर आगे बढ़ने से भविष्य सुखमय होगा।
→ यह स्तंभ 2 के अर्थ C से मेल खाता है।

**उत्तर: 1 → B, 2 → A, 3 → D, 4 → C**

## प्रश्नावली 6.4 — सोच-विचार के लिए

### प्रश्न 1

"बिना बिचारे जो करै सो पाछे पिछताय।" कविता में बिना विचार किए कार्य करने के क्या नुकसान बताए गए हैं?

**हल**

कुंडलिया में बिना विचार किए कार्य करने के निम्नलिखित नुकसान बताए गए हैं —

1. अपना काम बिगड़ जाता है — 'काम बिगारे आपनो' (व्यक्ति अपना ही काम खराब कर लेता है)।
2. जग में हँसाई होती है — 'जग में होत हँसाय' (दुनिया में उपहास होता है)।
3. मन में चैन नहीं रहता — 'चित्त में चैन न पावै' (मन अशांत रहता है)।
4. खान-पान, सम्मान, राग-रंग कुछ भी अच्छा नहीं लगता — 'खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै' (जीवन की सारी खुशियाँ फीकी पड़ जाती हैं)।
5. दुख दूर नहीं होता — 'दुख कछु टरत न टारे' (वह पीड़ा टाली नहीं जा सकती)।
6. जिय में खटकता रहता है — 'खटकत है जिय माहिं' (मन में कसक बनी रहती है)।

**उत्तर: बिना सोचे काम करने से काम बिगड़ता है, दुनिया हँसती है, मन में चैन नहीं रहता, खान-पान-सम्मान सब बेकार लगता है और दुख लंबे समय तक खटकता रहता है।**

### प्रश्न 2

"बिना बिचारे जो करै सो पाछे पिछताय।" कुंडलिया में जो बातें सैकड़ों साल पहले कही गई थीं, क्या वे आपके लिए भी उपयोगी हैं? कैसे? उदाहरण देकर समझाइए।

**हल**

हाँ, गिरिधर कविराय की ये बातें सैकड़ों साल पहले कही गई थीं, फिर भी आज भी उतनी ही उपयोगी हैं।

उदाहरण 1 — परीक्षा में बिना पढ़े उत्तर लिखना: यदि कोई छात्र बिना सोचे-समझे उत्तर लिखता है, तो उसका परिणाम खराब होता है और बाद में पछतावा होता है।

उदाहरण 2 — जल्दबाजी में गलत निर्णय: आज के समय में बिना सोचे सोशल मीडिया पर कोई संदेश फॉरवर्ड करना हानिकारक हो सकता है।

उदाहरण 3 — खरीदारी में जल्दबाजी: बिना सोचे किसी वस्तु को खरीद लेने से बाद में पछतावा होता है।

इस प्रकार 'पहले सोचो, फिर करो' का यह संदेश आज भी हर क्षेत्र में उतना ही प्रासंगिक है।

**उत्तर: हाँ, ये बातें आज भी उपयोगी हैं — परीक्षा में बिना सोचे लिखना, जल्दबाजी में गलत निर्णय लेना, या बिना सोचे सोशल मीडिया पर संदेश फैलाना — सभी में बाद में पछतावा होता है।**

### प्रश्न 3

"खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै।।" इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से देखकर लिखिए। प्रत्येक के लिए एक-एक उदाहरण भी दीजिए। (रेखांकित शब्द: राग रंग, मनहिं, भावै)

**हल**

पंक्ति में तीन विशेष शब्दों के अर्थ और उदाहरण —

1. राग रंग — अर्थ: आनंद-मनोरंजन, खुशी के उत्सव या मेले-उत्सव।
उदाहरण: मेले में राग-रंग का भरपूर माहौल था, परंतु दुखी मन को कुछ भी अच्छा नहीं लगा।

2. मनहिं — अर्थ: मन को (मन + हिं = मन को भी, 'हिं' बल-सूचक प्रत्यय)।
उदाहरण: बड़े सुंदर बगीचे में घूमने पर भी उदास व्यक्ति के मनहिं कोई प्रसन्नता न मिली।

3. भावै — अर्थ: अच्छा लगना, पसंद आना (ब्रज भाषा का रूप, 'भाना' क्रिया का वर्तमान)।
उदाहरण: उसे मिठाइयाँ भावै नहीं थीं क्योंकि उसका मन अशांत था।

---

**उत्तर: राग रंग — आनंद-मनोरंजन; मनहिं — मन को भी; भावै — अच्छा लगना।**

## प्रश्नावली 6.5 — शब्द से जुड़े शब्द

### प्रश्न 1

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'चित्त' या 'मन' से जुड़े शब्द कुंडलियों में से चुनकर लिखिए — (शब्द-जाल में 'चैन' पहले से भरा हुआ है। कुंडलियों में से अन्य 'मन (चित्त)' से संबंधित शब्द खोजिए।)

**हल**

दोनों कुंडलियों में 'मन' और 'चित्त' से जुड़े निम्नलिखित शब्द मिलते हैं —

1. चैन — 'चित्त में चैन न पावै' (मन की शांति)
2. परतीती — 'यहै करू मन परतीती' (मन का विश्वास)
3. खटकत — 'खटकत है जिय माहिं' (मन में चुभना/कसकना; 'जिय' = मन/हृदय)
4. खता — 'चित्त में खता न पावै' (मन में दोष/अपराधबोध)
5. चित — 'ताही में चित देइ' (मन लगाना; 'चित' = चित्त का संक्षिप्त रूप)

**उत्तर: कुंडलियों में 'मन/चित्त' से जुड़े शब्द: चैन, परतीती, खटकत (जिय माहिं), खता, चित।**

## प्रश्नावली 6.6 — कविता की रचना — काव्य-विशेषता मिलान

### प्रश्न 1

नीचे एक स्तंभ में कविता की पंक्तियों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं और उनसे संबंधित पंक्तियाँ दूसरे स्तंभ में दी गई हैं। कविता की विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए — कविता की विशेषताएँ: 1. पंक्ति के अंतिम शब्द की ध्वनि आपस में मिलती-जुलती है। 2. कवि के नाम का उल्लेख किया गया है। 3. एक-दूसरे के विपरीत विचार एक साथ आए हैं। 4. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले एक से अधिक शब्द एक ही पंक्ति में आए हैं। कविता की पंक्तियाँ: 1. कह गिरिधर कविराय यहै करू मन परतीती।। 2. ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। / दुजरन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै।। 3. बिना बिचारे जो करै सो पाछे पिछताय। 4. बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।

**हल**

विशेषता 1 — 'पंक्ति के अंतिम शब्द की ध्वनि आपस में मिलती-जुलती है' (तुकबंदी/अनुप्रास):
→ पंक्ति 3 — 'बिना बिचारे जो करै सो पाछे पिछताय।'
(यहाँ 'करै' और 'पिछताय' में अंत की ध्वनि मिलती है; साथ ही दोहे-पंक्ति में 'हँसाय'-'पिछताय' की तुकबंदी है।)

विशेषता 2 — 'कवि के नाम का उल्लेख किया गया है':
→ पंक्ति 1 — 'कह गिरिधर कविराय यहै करू मन परतीती।।'
(यहाँ 'गिरिधर कविराय' का नाम स्पष्ट उल्लेख है।)

विशेषता 3 — 'एक-दूसरे के विपरीत विचार एक साथ आए हैं' (विरोधाभास/विपरीतार्थकता):
→ पंक्ति 4 — 'बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।'
(यहाँ 'बीती' (अतीत) और 'आगे' (भविष्य) विपरीत विचार एक साथ आए हैं।)

विशेषता 4 — 'एक ही वर्ण से शुरू होने वाले एक से अधिक शब्द एक ही पंक्ति में आए हैं' (अनुप्रास):
→ पंक्ति 2 — 'ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। / दुजरन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै।।'
(पंक्ति 2 में 'ब' से शुरू — 'बात' और 'बनि'; तथा 'न' से — 'न कोइ', 'न पावै' एक ही ध्वनि की आवृत्ति है।)

**उत्तर: विशेषता 1 → पंक्ति 3 (तुकबंदी); विशेषता 2 → पंक्ति 1 (कवि का नाम); विशेषता 3 → पंक्ति 4 (विपरीत विचार: बीती/आगे); विशेषता 4 → पंक्ति 2 (एक ही वर्ण से — 'ब': बात, बनि)।**

## प्रश्नावली 6.7 — सोच-समझकर — संदेश और उचित कार्य

### प्रश्न 1

मान लीजिए कि आपको या आपके किसी परिजन को नीचे दिए गए संदेश मिलते हैं। ऐसे में आप क्या करेंगे? नीचे दिए गए प्रत्येक संदेश के सामने उचित कार्य बताइए — संदेश 1: आपका बैंक खाता बंद होने वाला है। संदेश 2: बधाई हो! आपने 10 लाख रुपये की लॉटरी जीती है। सत्यापन के लिए ₹ 5000 इस नंबर पर अभी भेज दें। संदेश 3: गलती से आपके नंबर पर ₹ 1000 का रिफंड भेजा है। कृपया रिफंड वापस भेज दें। संदेश 4: आपका सिम कार्ड बंद होने वाला है। के.वाई.सी. अपडेट करने के लिए हमें आधार और पैन की फोटो भेजें। संदेश 5: आपके मनपसंद मोबाइल पर 70 प्रतिशत तक की छूट, ऑफर खत्म होने से पहले यहाँ पेमेंट करें। संदेश 6: मैं तुम्हारा चाचा बोल रहा हूँ। ट्रेन में फँसा हूँ। तुरंत ₹ 5000 इस नंबर पर भेज दो। संदेश 7: इस ऐप को डाउनलोड करें और ₹ 1000 का कैशबैक पाएँ। संदेश 8: यहाँ मुफ्त गिफ्ट पाने का मौका है। इस लिंक पर क्लिक करें और जानकारी दर्ज करें। संदेश 9: आपको बिना गारंटी के तुरंत ₹ 50,000 का ऋण मिल सकता है। अभी प्रोसेसिंग फीस भरें। संदेश 10: इस लिंक पर क्लिक करें और ₹ 100 का फ्री मोबाइल रिचार्ज पाएँ। संदेश 11: आपके ए.टी.एम. कार्ड की वैधता समाप्त हो रही है। इसे तुरंत अपडेट करने के लिए पिन बताएँ। संदेश 12: आपका पेमेंट फँसा हुआ है। इसे रिफंड करने के लिए ये क्यू.आर. कोड स्कैन करें।

**हल**

संदेश 1 — 'आपका बैंक खाता बंद होने वाला है।'
→ उचित कार्य: ओ.टी.पी. किसी को न दें। तुरंत कॉल काट दें। अपने बैंक से सीधे संपर्क करें।

संदेश 2 — 'बधाई हो! 10 लाख रुपये की लॉटरी जीती है। ₹ 5000 भेजें।'
→ उचित कार्य: संदिग्ध वेबसाइट पर कोई भुगतान (पेमेंट) न करें। ऐसी वेबसाइट को साइबर क्राइम सेल में रिपोर्ट करें।

संदेश 3 — 'गलती से ₹ 1000 का रिफंड भेजा है। वापस भेजें।'
→ उचित कार्य: किसी अनजान को पैसा न भेजें। अपने बैंक ऐप में सभी लेन-देन की जाँच करें। यदि पैसा कटा है तो तुरंत बैंक को सूचित करें।

संदेश 4 — 'सिम कार्ड बंद होने वाला है। आधार और पैन की फोटो भेजें।'
→ उचित कार्य: इस प्रकार के कॉल को तुरंत काट दें। बैंक से सीधे संपर्क करें। फोन पर आधार या पैन या कोई व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें।

संदेश 5 — 'मोबाइल पर 70% छूट, ऑफर खत्म होने से पहले पेमेंट करें।'
→ उचित कार्य: संदिग्ध छूट वाले या मुफ्त वाले झाँसे में न फँसें। लिंक पर क्लिक न करें।

संदेश 6 — 'मैं तुम्हारा चाचा हूँ। ट्रेन में फँसा हूँ। ₹ 5000 भेजो।'
→ उचित कार्य: व्यक्ति की पहचान की पुष्टि करें। तुरंत पैसे ट्रांसफर न करें। परिवार के अन्य सदस्यों से बात करें।

संदेश 7 — 'इस ऐप को डाउनलोड करें और ₹ 1000 का कैशबैक पाएँ।'
→ उचित कार्य: किसी अनजानी वेबसाइट से कोई ऐप डाउनलोड न करें। ऐप की समीक्षा और रेटिंग की जाँच करें। संदिग्ध ऐप को फोन आदि से हटा दें।

संदेश 8 — 'मुफ्त गिफ्ट पाने का मौका है। लिंक पर क्लिक करें और जानकारी दर्ज करें।'
→ उचित कार्य: किसी संदिग्ध ऐड (विज्ञापन) पर क्लिक न करें। अपने ब्राउज़र में पॉप-अप ब्लॉकर चालू करें।

संदेश 9 — 'बिना गारंटी के ₹ 50,000 का ऋण। अभी प्रोसेसिंग फीस भरें।'
→ उचित कार्य: केवल अधिकृत बैंकों से संपर्क करें। ऋण मंजूरी फीस के नाम पर किसी को पैसा न भेजें। साइबर क्राइम सेल में 1930 नंबर पर सूचित करें।

संदेश 10 — 'लिंक पर क्लिक करें और ₹ 100 का फ्री मोबाइल रिचार्ज पाएँ।'
→ उचित कार्य: ऐसी किसी भी लॉटरी पर भरोसा न करें। इसके विषय में साइबर सेल को सूचित करें।

संदेश 11 — 'ए.टी.एम. कार्ड की वैधता समाप्त हो रही है। पिन बताएँ।'
→ उचित कार्य: ए.टी.एम. कार्ड की जानकारी किसी के साथ साझा न करें। बैंक के असली उपभोक्ता सहायता फोन नंबर पर संपर्क करें। ए.टी.एम. पिन तुरंत बदलें।

संदेश 12 — 'पेमेंट फँसा हुआ है। रिफंड के लिए यह क्यू.आर. कोड स्कैन करें।'
→ उचित कार्य: किसी अज्ञात व्यक्ति के भेजे क्यू.आर. कोड को स्कैन न करें। किसी संदिग्ध गतिविधि को तुरंत बैंक और पुलिस को रिपोर्ट करें।

---

**उत्तर: सभी 12 संदेश साइबर ठगी के उदाहरण हैं। हर मामले में: ओ.टी.पी./पिन/आधार/पैन साझा न करें; तुरंत भुगतान न करें; बैंक/परिवार से पुष्टि करें; संदिग्ध लिंक न खोलें; साइबर क्राइम सेल (1930 या cybercrime.gov.in) पर रिपोर्ट करें।**